शिक्षक प्रशिक्षण में नवाचार : नयापन और नवीनता

प्रिंस जैन
प्रभारी प्राचार्य : पं.रामलाल शर्मा शिक्षा महा.,
होशंगाबाद (म.प्र.) भारत.

श्रीमती डॉली जैन
सहा.प्राध्या : एन.ई.एस. शिक्षा महा.,
होशगाबाद, (म.प्र.) भारत.

शोध सारांश :

शिक्षा में नवाचार या नवाचारी शिक्षा कोई नई अवधारणा नही है। बस, वर्तमान शिक्षण विधियों और पढाने के तरीकों में कुछ नयापन और नवीनता का समावेश करके हम अपने विद्यार्थियों के कौशल में कुछ विकास कर सकते हैं। वास्तव में शिक्षा का अर्थ ही व्यक्तित्व का सर्वांगींण विकास है। किताबी ज्ञान के अलावा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास करना भी शिक्षक की जिम्मेदारी होती हैं। अपनें लक्ष्यों को प्राप्त करनें के लिये परंपरागत तरीकों के अलावा ऐसे नये तरीके भी खोजे जा सकते हैं, जो विद्यार्थियों की प्रतिभा की पहचान करने में सक्षम हों। और ऐसे कुछ नये कार्य नवाचार की श्रेणी में आ सकतें हैं। नई चीजें किसे अच्छी नहीं लगतीं, अगर विद्यार्थियों को नई और रूचिकर विधियों से अध्यापन कराया जाये, तो उनमें न केवल पढ़ाई के प्रति लगन पैदा होती है, बल्कि वह जल्दी भी सीखतें हैं। एक अच्छा शिक्षक वह होता है, जो बाल मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञाता भी हो। समुदाय शिक्षक, समुदाय बालक और पालक ये सभी मिलकर किसी विद्यालय के बातावरण का निर्माण करते हैं। अच्छी शिक्षा के लिये शिक्षक समुदाय विद्यार्थियों और पालकों के बीच अच्छे सामंजस्य की आवश्यकता होती है। एक सफल संस्था प्रमुख स्वयं कितना काम करता है, इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह होता है कि वह अपने सहकर्मियों से कितना और कैसा काम लेता है। मानवीय साधनों के कुशल उपयोग से शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में चमत्कारी उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इस विषयक शिक्षण–प्रशिक्षण में नवाचार में नयापन और नवीनता को प्रतिपादित किया गया है।

I भूमिका

शिक्षा में नवाचारी गतिविधियों के लिये मानवीय संसाधन जैसे शिक्षक, पालक और खासकर विद्यार्थी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई बार बच्चे छोटे होने के बावजूद भी बड़ी उपलब्धियॉ प्राप्त करनें में बड़ी भूमिका निभातें हैं। शिक्षकों का बच्चों से मधुर व्यवहार और सकारात्मक संवाद शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में एक बहुत अच्छी भूमिका निभाते हैं। बच्चों की प्रतिभा को समझना और उनकी प्रतिभा का उचित उपयोग करना भी एक महत्वपूर्ण कौशल है। वास्तव में स्कूल में एक ऐसा वातावरण होना चाहिए, जो बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के अनुकुल हों। स्कूलों में ऐसी पाठ्य सहगामी गतिविधियॉ होती रहनी चाहिये, जिससे बच्चों के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास हो ।

शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। शिक्षा एक सामाजिक आवश्यकता है । यह मनुष्य समुदाय की स्वाभाविक विशेषता रही है। शिक्षा के द्वारा ही समाज को दिशा एवं नया स्वरूप मिला है। औद्योगिक क्रान्ति के बाद और उससे भी अधिक आधुनिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिवर्तनों के बाद जीवन शैली के ढंग, उत्पादन के तरीकों, मनुष्य की आशाओं –आशंकाओं, ,उनकी चिन्ताओं और खुशियों मे गुणात्मक परिवर्नन आ गया है। शिक्षा की सम्भावनाओं में परिवर्तन और वृद्धि हुई है। शिक्षा के लिये यह चुनौती पूर्णतः नवीन है, क्योंकि शिक्षा का अब तक का कार्य समकालीन समाज को उसी रूप में जीवित रखना और उसके सामाजिक संबंधों को बनाये रखना था। परन्तु आज उसके लक्ष्य में परिवर्तन आ गया है । अतः आज हमारे ऊपर यह दायित्व आ गया है कि हम शिक्षा में नवाचार का प्रयोग करें । शिक्षा उस विकास का नाम हैं, जो आजीवन चलती रहती है । इसी विकास के कारण व्यक्ति अपनी परिस्थतियों पर विजय प्राप्त करता हैं। जीवन की विभिन्न समस्याओं को सुलझाता है, और अपने कर्त्तव्यों का पालन करता एवं उत्तरदायित्वों को निभाता है।

नवाचार का शाब्दिक अर्थ : नवाचार शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द innovation का हिन्दी रूपान्तरण है , जहाँ इसका अर्थ नई रीति, नये विचारों का प्रयोगों प्रचलन या नवनिर्माण है। हिन्दी भाषा का शब्द नवाचार भी इसी भाव को दर्शाता है। नवाचार शब्द "नव+आचार" को मिलाकर बना है। जिसका अलग–अलग अर्थ नया और व्यवहार अथवा आचरण है। नये व्यवहार का अभिप्राय स्थापित साँचे में नयी प्रणाली का समावेश करना है। "शिक्षा में नवाचार" का तात्पर्य प्रचलित शिक्षा प्रणाली में नये व्यवहार अर्थात् नवीन विधियों एवं रीतियों का समावेश करना है। प्रकृति में परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर क्रियाशील रहती है । समाज इस परिवर्तनशील जगत का अंग हैं। इसलिये समाज भी एक गत्यात्मक संस्था है, उसमें परिवर्तन गत्यात्मकता का ही परिणाम है । विज्ञान व तकनीकी विकास ने परिवर्तन की प्रक्रिया को और गति प्रदान की है। तेजी से हो रहे परिवर्तन मानव समाज के प्रत्येक पक्ष राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक व सामाजिक क्षेत्र में परिवर्तन दृष्टिगोचर हैं। तकनीकी विकास, यंत्रीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, तीव्र कृषि विकास, परिवहन एवं संचार की तीव्र विकास यात्रा के कारण परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है । इन परिवर्तनों के मूल में शिक्षा का योगदान समाहित है । एक तरफ जहाँ शिक्षा ने सामाजिक परिवर्तनों में योगदान दिया है, वही दूसरी ओर शिक्षा में परिवर्तनों को सामाजिक परिवर्तनों ने गति दी है । फलतः शिक्षा का स्वरूप बदला है । उसमें नये पक्षों , नवीन आयामों , विचार धाराओं को सम्मिलित किया गया है । इस प्रकार शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन एक दूसरे पर आश्रित हैं एवं एक दूसरे को प्रभावित करते हैं । यह सत्य है कि शिक्षा और समाज दोनों में परिवर्तन हो रहे हैं, किन्तु जिस गति से सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं, उस गति से शिक्षा में परिवर्तन नहीं हो रहे । यही कारण है कि शिक्षा सामाजिक आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने मे सक्षम नहीं हो पा रही है । तेजी से बढ़ती जनसंख्या, तीव्र वैज्ञानिक प्रगति, औद्योगीकरण, राजनैतिक परिवर्तन, विश्व परिदृश्य में परिवर्तन के कारण मानव के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। देश में बेरोजगारी, छात्र अशान्ति, युवा असन्तोष, अनुशासनहीनता आदि अनेक समस्याएँ गम्भीर

चुनौती प्रस्तुत कर रही हैं । इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में नये विचारों , नवीन कार्यक्रमों , विधियों व नव प्रणालियों की आवश्यकता पर बल दिया गया है । इस दिशा मे शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा आदि कार्यक्रम लागू कियें गये हैं । शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे ऐसे परिवर्तनों , एवं प्रवृत्तियों को शिक्षा नवाचार, शिक्षा के नूतन आयाम, शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियाँ आदि नाम से जाना जाता है ।

II शिक्षा में नवाचार/प्रवृत्तियाँ

(क) शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय प्रबन्ध में सहभागिता अथवा स्वशासन।
(ख) शिक्षा में प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों का समावेश करना।
(ग) शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा का प्रावधान।
(घ) निर्देशन तथा परामर्श पर बल।
(च) पाठ्यक्रम में नवीन विधियों का समावेश।
(छ) परीक्षा की नवीन तकनीक–ग्रेड प्रणाली।
(ज)सामाजिक दृष्टि से उपयोग उत्पादक कार्य का पाठ्यक्रम में समावेश।
(झ) सभी के लिये समान और शैक्षिक अवसरों की समानता।
(ट) विद्यालय संस्थागत योजना।
(ठ) विद्यालय सुधार ।
(ड) सभी के लिये शिक्षा।
(ढ) मूल्य शिक्षा पर बल।
(ण) धर्म निरपेक्षता पर बल ।
(त) प्रौढ़ शिक्षा ।
(थ) कम्प्यूटर का शैक्षिक प्रयोग।
(द) ई – मेल।
(ध) मल्टीमीडिया एप्रोच।
(न) सैटेलाइट सम्प्रेषण।
(प) मॉड्यूलर उपागम।
(फ) रेडियो विजन।
(ब) शैक्षिक दूरदर्शन।
(भ) सी.डी. रोम।
(म) सिमुलेटेड शिक्षा।
(य) अन्तः क्रिया प्रणाली।
(र) सिस्टम एप्रोच।
(ल) अभिक्रमित अध्ययन।
(व) सूक्ष्म शिक्षण।

III शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता एवं महत्त्व

(क) वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के अनुरूप शिक्षा प्रणाली हेतु।
(ख) कल्याणकारी राज्य की स्थापना हेतु शिक्षा का सार्वभौमिकरण, निशुल्क शिक्षा, जन शिक्षा।
(ग) जनसंख्या की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जनसंख्या शिक्षा।
(घ) तीव्र आर्थिक विकास हेतु।
(च) मानव संसाधन का विकास करने हेतु।
(छ) रोजगार के अवसरों में वृद्धि हेतु।
(ज) विशिष्टकरण में वृद्धि हेतु एवं तद्जनित समस्याओं की पूर्ति हेतु (पिछड़े , मन्दबुद्धि एवं विकलांगों के लिये शिक्षा) ।
(झ) सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप शिक्षा का नगरीकरण, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, महिलाओं की दशा में सुधार, ग्रामीणों की दशा मे सुधार, बाल श्रम उन्मूलन, सामुदायिक विकास कार्यक्रम आदि।
(त) पर्यावरण प्रदूषण जनित समस्याओं के समाधान हेतु आर्थिक विकास, औद्योगीकरण, रहन–सहन की शैली में परिवर्तन, रासायनिक परिवर्तन परमाणु ऊर्जा का विकास, जनसंख्या में वृद्धि और वनों का विकास।
(थ) अन्य कारणों से आवश्यकता : आर्थिक क्षेत्र में निजीकरण एवं उदारीकरण के प्रचलन सेवी संस्थाओं की बढ़ती भूमिका एवं वैश्वीकरण के कारण शिक्षा में नवाचार महत्वपूर्ण हो गया है ।

पर्यावरण प्रदूषण के कारणों एवं परिणामों को बताने और पर्यावरण में संरक्षण की भावना जागृत करने के लिये शिक्षा प्रणाली में पर्यावरणीय शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित किया गया है। छोटे परिवार के संबंध में उचित दृष्टिकोण का विकास करने हेतु जनसंख्या शिक्षा को भी शिक्षा प्रणाली के विभिन्न स्तरों पर अंगीकार किया गया है। विभिन्न आयु समूहों में जनसंख्या संबंधी जानकारी दी जाती है। दूरस्थ शिक्षा भी नवाचार का एक सशक्त माध्यम है। इसके अन्तर्गत शिक्षार्थियों को दूर से ही पत्राचार की टी.वी.,रेडियों के द्वारा शिक्षा दी जाती है। मुक्त विश्वविद्यालय भी दूरस्थ शिक्षा का ही एक रूप है। अभिभावकों को उनके बच्चों के प्रति जिम्मेदारी का ज्ञान कराने के लिये अभिभावक शिक्षा तथा विद्यालय व समुदाय के बीच एवं छात्रों को सामुदायिक सेवा के लिये प्रेरित करने के लिये शिक्षा प्रणाली में सामुदायिक सेवा को सम्मिलित किया गया है। समाज में नैतिक पतन एवं मूल्य के क्षरण के कारण अनेक समस्याएँ हो गयी हैं। समाज में मूल्यों की पुनः स्थापना करने एवं बालकों में जीवन मूल्य जागृत करने हेतु मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। समाज में विकलांगों , अपराधी बालकों , प्रतिभाशाली बालकों एवं मन्दबुद्धि बालकों आदि जैसे विशिष्ट वर्गों के लिये विशिष्ट शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर समाहित किया हैं। टेलीकान्फ्रेन्सिंग एक इलेक्ट्रानिक प्रणाली है, जिसमें दो या दो से अधिक दूर बैठे व्यक्ति अपनी इच्छित विषयवस्तु से संबंधित चर्चा में भाग ले सकते हैं, अपनी बात कह सकते हैं। दूसरों की बात सुन सकते हैं और उन पर तुरन्त प्रतिक्रियाएं ,सुझाव या अभिमत प्राप्त कर सकते हैं। सूक्ष्म शिक्षण एक ऐसी शिक्षण प्रशिक्षण विधि है जो कक्षा अध्यापक की जटिलता तथा विस्तार को कम करके इन्हें लघु रूप देती है और शिक्षण कौशलों एवं निपुणताओं के उन्नयन के लिये कार्य करती है। अभिक्रमित अध्ययन में छात्रों के समक्ष विषय वस्तु को अनेक छोटे –छोटे एवं नियोजित किये गये खण्डों एवं सोपानों में प्रस्तुत किया जाता है। इसके द्वारा छात्र स्वयं ज्ञान अर्जित करता हुआ अज्ञात से ज्ञात की ओर बढ़ता है। इस प्रयास में छात्र को उसके द्वारा अर्जित किये गये कार्य की तुरन्त पुष्टि करा दी जाती है एवं पुनर्बल भी मिलता है। स्वाध्याय की यह प्रक्रिया छात्र में आत्मविश्वास उत्पन्न करती है। शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर द्वारा नये –नये प्रयोग हुऐ हैं और हो रहे हैं। शिक्षा में प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर की कक्षाओं में कम्प्यूटर द्वारा शिक्षा प्रदान की जा रही है। कम्प्यूटर एक ऐसा क्षेत्र है जिससे उज्ज्वल भविष्य का सपना साकार हो सकता है, हो रहा हैं।

संदर्भ ग्रंथ

{1} शोध समीक्षा और मूल्यांकन : अंक 34 नव. 2011 ISSN 0974.2832।
{2} शैक्षिक तकनीकी : डॉ. वालिया जे.एस.।